



## 1. सं वदध्वम्



वेद भारतीय ज्ञान और धर्म परम्परा के आदि स्रोत हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध ये चार वेद पद्यात्मक हैं। वेद के इन पद्यों को मंत्र के रूप में जाना जाता है। इन मन्त्रों द्वारा अनेक प्रकार की स्तुतियाँ की गई हैं, इस प्रकार की स्तुतियों के माध्यम से उपदेश भी दिए गए हैं।

वैदिक विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए वेद की इन प्रार्थनाओं से प्रेरणा ग्रहण करके अन्य विद्वानों, भक्त-कवियों ने भी अनेक स्तुतियाँ, प्रार्थनाएँ अलग-अलग लौकिक छन्दों में रची हैं। ये प्रार्थनाएँ पद्यबद्ध हैं और इन्हें श्लोक के रूप में जाना जाता है। इन रचनाओं में भी वेदों के समान वैश्विक भाव हैं। इतना ही नहीं, मानव जगत से आगे बढ़कर प्राणिमात्र के कल्याण की कामना की गई है। ऐसी ही भावना से युक्त दो प्रार्थनाएँ यहाँ प्रस्तुत की गई हैं।

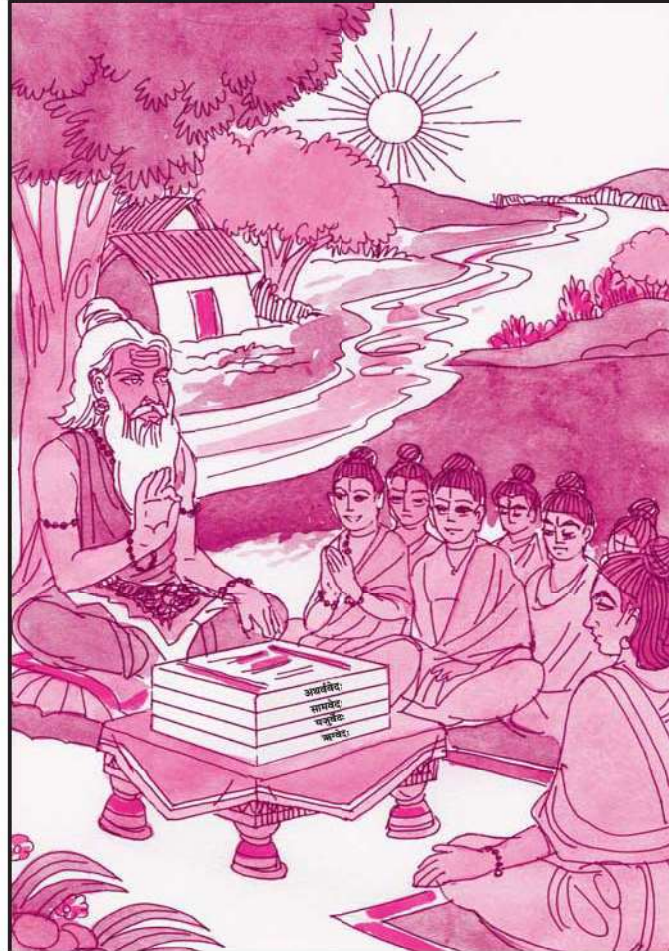
प्रत्येक कार्य का प्रारम्भ मंगल प्रार्थना से करने की प्राचीन परम्परा रही है। इस परम्परा का अनुसरण करते हुए इन मन्त्रों तथा श्लोकों के माध्यम से संस्कृत के अध्ययन का मंगलाचरण करेंगे। प्रस्तुत पाठ में पसंद किए गए ऋग्वेद के मंत्र में सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित उपदेश दिए गए हैं। यजुर्वेद में से पसंद किए गए दूसरे मन्त्र में दुर्गुणों को दूर करने की प्रार्थना की गई है। जबकि तीसरे अथर्ववेद के मंत्र में पारिवारिक जीवन का आदर्श बना रहे, ऐसा एक उपदेश दिया गया है। अंतिम दो श्लोक में संपूर्ण समाज तथा देश का हित और कल्याण हो, ऐसी शुभकामना प्रकट हुई है।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वं सं जानाना उपासते ॥ 1 ॥ ऋग्वेदे : 10.191.2

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परी सुव।

यद्भद्रं तन्नऽ आ सुव ॥ 2 ॥ यजुर्वेदे : 30.3



अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।  
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥ 3 ॥ अथर्ववेदे 3.30.2

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।  
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥ 4 ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी ।  
देशोऽयं क्षोभरहितो मानवाः सन्तु निर्भयाः ॥ 5 ॥

### टिप्पणी

संज्ञा : ( पुल्लिङ्ग ) अनुव्रतः व्रत के पीछे चलनेवाला निरामयः रोग रहित, निरोगी, स्वस्थ पर्जन्यः बरसात  
( स्त्रीलिङ्ग ) : जाया पत्नी पृथिवी धरती, भूमि  
( नपुंसकलिङ्ग ) दुरितम् खराब कार्य, दुर्गुण, दुष्कर्म  
सर्वनाम : वः तुम्हारा विश्वानि ( नपुं. ) सभी यत् ( नपुं. ) जो तत् ( नपुं. ) वह नः हमारा सर्वे ( पुं. ) सभी  
अयम् ( पुं. ) यह

विशेषण : मधुमतीम् ( वाचम् ) मधुर वाणी ( से ) क्षोभरहितः उद्वेग रहित, घबराहट रहित, शान्त मानवाः मनुष्य  
निर्भयाः भय से रहित, निर्भय

अव्यय : यथा जैसे मा नहीं, निषेध

समास : क्षोभरहितः ( क्षोभेन रहितः - तृतीया तत्पुरुष )

क्रियापद : प्रथम गण : ( परस्मैपदी ) भू ( भवति ) होना, विद्यमान, बनना वद् ( वदति ) बोलना, कहना  
दृश् > पश्य ( पश्यति ) देखना, दृष्टिगोचर करना वर्ष ( वर्षति ) बरसना

### विशेष

1. शब्दार्थ : सम् गच्छध्वम् ( तुम ( हम ) सब ) साथ-साथ चलो, साथ मिलकर जाओ सम् वदध्वम् ( तुम सब )  
साथ-साथ बोलो । मनांसि मन ( ब.व. ) सम् जानताम् एक समान ज्ञान प्राप्त करो, एक समान जानो भागम् हविष् के  
भाग को ( अग्नि में डाली जाने वाली आहुति अर्थात् हविष् ) पूर्वे पहले, प्राचीनकाल में सम् जानानाः समान जानने  
वाले, समान ज्ञानी, एकमत रहने वाले उपासते उपासना करते हैं सवितः हे सूर्य देवता, हे उत्पत्ति करने वाले ( सम्बोधन  
है ) परा सुव ( तुम ) दूर करो आ सुव ( तुम ) प्राप्त कराओ पितुः पिता के मात्रा माता के साथ संमनाः समान मन-  
विचार वाले वाचम् वाणी को, वचनों को शान्तिवाम् शान्तिदायक, शान्तियुक्त भद्राणि कल्याणकारी विषय, मंगलकारी  
भावनाएँ कश्चित् कोई भी दुःखभाग् दुःख को भागीदार, दुःख में सहभागी काले समय, ( समय होने पर )  
सस्यशालिनी अन्न देने के स्वभाव वाली, अनाज के कारण सुशोभित

2. सन्धि : सवितर्दुरितानि ( सवितः दुरितानि ) । यद्भद्रम् ( यत् भद्रम् ) । तन्न आसुव ( तत् नः आसुव ) । पुत्रो मात्रा  
( पुत्रः मात्रा ) । देशोऽयं क्षोभरहितो मानवाः ( देशः अयम् क्षोभरहितः मानवाः ) ।

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- |                                                                       |                       |
|-----------------------------------------------------------------------|-----------------------|
| (1) पूर्वे के सं जानानाः भागम् उपासते ?                               | <input type="radio"/> |
| (क) मनुष्याः      (ख) असुराः      (ग) देवाः      (घ) सर्वे            |                       |
| (2) कविः किं याचते ?                                                  | <input type="radio"/> |
| (क) भद्रम्      (ख) दुरितम्      (ग) सुखम्      (घ) धनम्              |                       |
| (3) जाया कीदृशीं वाचं वदतु ?                                          | <input type="radio"/> |
| (क) ललिताम्      (ख) शान्तिवाम्      (ग) ज्ञानयुताम्      (घ) शोभनाम् |                       |
| (4) सर्वे कीदृशाः भवन्तु ?                                            | <input type="radio"/> |
| (क) योगिनः      (ख) मानिनः      (ग) सुखिनः      (घ) बलिनः             |                       |
| (5) पर्जन्यः कदा वर्षतु ?                                             | <input type="radio"/> |
| (क) ह्यः      (ख) अद्य      (ग) श्वः      (घ) काले                    |                       |
| (6) हे देव ..... दुरितानि परासुव ।                                    | <input type="radio"/> |
| (क) अग्ने      (ख) वरुण      (ग) सवितर्      (घ) वायो                 |                       |
| (7) पुत्रः ..... अनुव्रतः भवतु ।                                      | <input type="radio"/> |
| (क) मित्रस्य      (ख) मातुः      (ग) पितुः      (घ) स्वसुः            |                       |
| (8) ..... निरामयाः भवन्तु ।                                           | <input type="radio"/> |
| (क) पक्षिणः      (ख) जन्तवः      (ग) सर्वे      (घ) पशवः              |                       |
| (9) सर्वे ..... पश्यन्तु ।                                            | <input type="radio"/> |
| (क) दुरितानि      (ख) फलानि      (ग) धनानि      (घ) भद्राणि           |                       |
| (10) पृथिवी ..... भवतु ।                                              | <input type="radio"/> |
| (क) बलशालिनी      (ख) सस्यशालिनी      (ग) जलपूर्णा      (घ) धनपूर्णा  |                       |



## 2. एकवाक्येन संस्कृतभाषया उत्तरत ।

- (1) पूर्वे देवाः कथं भागम् उपासते ?
- (2) जाया कस्मै मधुमतीं वाचं वदतु ?
- (3) मानवाः कीदृशाः सन्तु ?
- (4) कः क्षौभरहितः भवतु ?

## 3. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं प्रयुज्य प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कः, कीदृशी, का)

- (1) जाया मधुमतीं वाचं वदतु ।
- (2) पुत्रः मात्रा संमनाः भवतु ।
- (3) काले वर्षतु पर्जन्यः ।

## 4. आज्ञार्थस्य अन्यपुरुष-बहुवचनरूपाणि चिनुत ।

भवतु            सन्तु            भवेत्  
पश्यन्तु        वर्षतु            भवन्तु ।

## 5. प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषायाम् लिखत ।

- (1) ऋषि सूर्य से किस की याचना करते हैं ?
- (2) पत्नी को पति के लिए कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ?
- (3) ऋषि सबके लिए क्या आशा व्यक्त करते हैं ?
- (4) संगठित रहने के लिए कवि क्या करने को कहते हैं ?

## 6. मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् - प्रार्थना के भावों को आप अपने शब्दों में वर्णित कीजिए।

## 7. श्लोकपूर्ति कुरुत ।

- (1) सं गच्छध्वं ..... उपासते ॥
- (2) सर्वे भवन्तु ..... भवेत् ॥

### प्रवृत्ति

- विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में इन मन्त्रों का प्रयोग प्रार्थना के रूप में करें।
- इस प्रकार के अन्य मन्त्रों और श्लोकों का संग्रह करें।